बौद्ध साहित्य — प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक स्रोत के रूप में

प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने और समझने के लिए बौद्ध साहित्य का विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है। बौद्ध धर्म से जुड़े ग्रंथों में उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति की बहुत सी महत्वपूर्ण बातें मिलती हैं। बौद्ध साहित्य को मुख्य रूप से कई भागों में बांटा गया है, जिनका विवरण नीचे दिया गया है:

1. जातक कथाएँ

- **परिचय:** बौद्ध साहित्य में जातक कथाओं का बहुत ऊँचा स्थान है। इन कथाओं में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म (पिछले जन्मों) की कहानियाँ दी गई हैं।
- **काल्पनिक होते हुए भी उपयोगी:** यद्यपि ये कथाएँ काल्पनिक हैं, फिर भी इनके ऐतिहासिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता।
- **सामाजिक स्थिति की जानकारी:** ये कथाएँ महात्मा बुद्ध के समय से पहले के भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का बहुत अच्छा चित्र प्रस्तुत करती हैं।

2. त्रिपिटक (पाली भाषा में रचित)

बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। संख्या में ये तीन हैं और इनकी रचना महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण (मृत्यु) के बाद हुई थी। इन्हें पाली भाषा में लिखा गया है:

- **सुत्तपिटक:** इसमें महात्मा बुद्ध के धार्मिक विचारों, वचनों और उपदेशों का पूरा संग्रह मिलता है।
- **अभिधम्मपिटक:** इसमें बौद्ध धर्म के दर्शन और दार्शनिक विचारों का वर्णन किया गया है।
- **विनयपिटक:** इसमें बौद्ध भिक्षुओं (साधुओं) के रहन-सहन और आचरण से संबंधित नियमों का वर्णन किया गया है।
- **ऐतिहासिक महत्व:** इन तीनों पिटकों से महात्मा बुद्ध के समकालीन (साथी) राजाओं तथा उस समय के भारत के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन के बारे में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

3. अन्य प्रमुख बौद्ध ग्रंथ

त्रिपिटक के अलावा भी कई अन्य प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ हैं जो प्राचीन इतिहास को जानने में मदद करते हैं:

- **महावंश और दीपवंश:** ये दोनों ग्रंथ पाली भाषा में लिखे गए श्रीलंका के प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इनकी रचना लगभग चौथी-पाँचवी शताब्दी में हुई थी।
- **भारत और लंका के संबंध:** चूँकि प्राचीन काल में भारत और श्रीलंका (लंका) के संबंध बहुत गहरे थे, इसलिए इन ग्रंथों से प्राचीन भारत के इतिहास पर भी काफी प्रकाश पड़ता है। हालांकि, इनमें कुछ बातें काल्पनिक और अतिरेक भरी भी मिलती हैं।

- **बुद्धचरित:** कुषाण वंश के राजा कनिष्क के शासनकाल में अश्वघोष द्वारा लिखे गए इस ग्रंथ से भी प्राचीन भारतीय इतिहास की बहुमूल्य जानकारी मिलती है।

4. मिलिंदपन्हो और अन्य संस्कृत बौद्ध ग्रंथ

- **मिलिंदपन्हो:** इस ग्रंथ में यूनानी (यवन) राजा मिनांडर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच हुए दार्शनिक और वैचारिक संवाद (बातचीत) का वर्णन है। इसमें तत्कालीन राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रश्नों पर बहुत अच्छे से विचार किया गया है।
- **दिव्यावादान:** संस्कृत भाषा में लिखे इस ग्रंथ में अनेक राजाओं की कथाएँ मिलती हैं। इसकी भाषा, विषय और शैली को देखकर लगता है कि इसे किसी एक लेखक या एक समय में नहीं लिखा गया, बल्कि इसमें चौथी शताब्दी तक के कई अंश जोड़े गए हैं।
- **ललित विस्तार:** इस ग्रंथ में महायान संप्रदाय के अनुसार महात्मा बुद्ध के जीवन की कथा का विस्तार से वर्णन किया गया है।
- **मंजुश्री मूलकल्प:** यह एक ऐसा महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें बौद्ध दृष्टिकोण से गुप्त सम्राटों का वर्णन और इतिहास मिलता है।
- **महावस्तु:** इस ग्रंथ में महात्मा बुद्ध को एक अद्भुत शक्तियों से युक्त महापुरुष के रूप में दिखाया गया है।

अतः स्पष्ट है कि बौद्ध साहित्य केवल धार्मिक आस्था की किताबें नहीं हैं, बल्कि ये प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति, राजाओं, सामाजिक दशा और व्यापारिक जीवन को समझने के सबसे प्रामाणिक और सशक्त साधन हैं। इन साहित्यों के अध्ययन बिना प्राचीन भारत का इतिहास अधूरा माना जाता है।